



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-27072020-220695
CG-DL-E-27072020-220695

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 2150]
No. 2150]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 24, 2020/श्रावण 2, 1942
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 24, 2020/SHRAVANA 2, 1942

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 जुलाई, 2020

का.आ. 2437(अ).—अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या मंत्रालय की ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य त्रिपुरा के सेपाहीजाला जिले में स्थित है, जो कि वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 18 (1) के अधीन अधिसूचना सं. एफ. 8 (50)/एफओआर-वन्यजीव/86/55164 के तहत दिनांक 2 फरवरी, 1987 को घोषित किया गया था, इसका क्षेत्रफल 18.54 वर्ग किलोमीटर में आच्छादित है। अभयारण्य के कोर क्षेत्र के अंतर्गत, अधिसूचना सं.एफ.8 (196)/एफओआर-वन्यजीव-2004 आईएनपी/33856-86 के द्वारा दिनांक 24 जनवरी, 2008 को 5.08 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को लमचित्ता राष्ट्रीय उद्यान के रूप में घोषित किया गया था। अब अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान के साथ निहित सभी प्रतिबंध हैं, जब तक कि मुख्य वन्यजीव वार्डन, त्रिपुरा द्वारा वन्यजीव (संरक्षण), अधिनियम 1972 के प्रावधानों के अनुसार स्थानीय जनता द्वारा कोई क्रियाकलाप या किसी को अनुमति नहीं दी जाती है;

और, अभयारण्य में वनस्पति और जीवजंतु की विविधता जैसे फयरे लंगूर और लमचित्ता के अलावा रहेसुस मकाक, सूअर-टैलेड मकाक, कप्पेड लंगूर, मुंजक, जंगली सूअर, सियार, साही, आदि सीवेट, तेंदुआ बिल्ली, बनबिलाव, पैंगोलिन, स्लो लोरिस, लार्ज भारतीय सीवेट, छोटा भारतीय सीवेट, सामान्य पाल्म सीवेट, हिमालयन पाल्म सीवेट, फ्लाइंग गिलहरी, क्रैब ईंटिंग नेवला, येलो श्रोटेड मार्टेन, भारतीय मॉनीटर छिपकली आदि की चार प्रजातियां विद्यमान हैं। उपरोक्त के अलावा पक्षी जैसे कबूतर, कलिज तीतर, डोंगोस, रेड जंगल फ्वोल, पाइड हॉर्नबिल, चिर्तीदार कबूतर, किंगफिशर, पैराकेट, भारतीय रोलर, काइट, व्हिस्टलिंग टेल्स, ओपन बिल स्टोर्क, कोर्मरेंट, रेड वाट्टलेड लैपविंग आदि भी पाए जाते हैं;

और, सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य में पक्षियों की लगभग 124 प्रजातियाँ की पहचान की गई हैं। अभयारण्य में 120.50 हेक्टेयर (52 संख्या) के क्षेत्र में बड़ी संख्या में जल निकाय है, जिनमें से अमृत सागर (25.35 हेक्टेयर) और रतियाबिल (20.75 हेक्टेयर) बड़े आकार के हैं जो जलीय जैव-विविधता को बढ़ाते हैं। वनस्पति में वृक्षों की 142 प्रजातियां, झाड़ियों की 55 प्रजातियां, जड़ी बूटियों की 90 प्रजातियां, पर्वरोहियों की 35 प्रजातियां, इपीफाइट्स की 11 प्रजातियां, प्टेरीडोफाइट्स की 10 प्रजातियां, बांस की 7 प्रजातियां शामिल हैं। मुख्य प्रजातियों के कुछ उदाहरण शेरिया रोबस्टा, कैमिया प्रजाति, आर्टोकार्पस चपलासा, स्चीमा वाल्लिचि, सिजियम कुरानी, लेगरस्ट्रोइमिया प्रजाति, टर्मिनलिया प्रजाति, अल्बेजिया प्रजाति, माल्लोटस, डील्लेनिया, बउहिनिया प्रजाति, फिकुस्प्येइस, लिन्नेया प्रजाति, डिप्टरोकार्पस टर्विनेट्स, विटेक्स, अल्स्टोनिया स्कॉलरस, मेसुआ फेरिंया, बोम्बक्स केइबा, आदि हैं;

और, अभयारण्य जैव-विविधता प्रतिनिधियों, स्थानिकता, समृद्ध प्रजातियों, भू-आकृति संबंधी विशेषता और सौंदर्य और सांस्कृतिक मूल्यों सहित अद्वितीय भूमि उपयोग पद्धतियों सहित जैव-विविधता मूल्यों में समृद्ध है। अभयारण्य में दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटापन्न (आर ई टी) प्रजातियों के उदाहरण में लमचित्ता (नेओफेलिस नेबुलोसा), हार्न बिल (अंथेराकोकेरोस कोरोनाटुस), मॉनीटर लिर्जाड (वारानुस बंगालेसिस), साही (अंथेरूस्मेकरोरूस अत्सामेसिस), सीवेट (हिमालयन पाल्म किवेट्स), आदि शामिल हैं;

और, सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विविरित हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, त्रिपुरा राज्य के सेपाहीजाला जिला के सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 10 मीटर (उत्तर, उत्तर-पश्चिमी, पश्चिम और दक्षिण में) से 50 मीटर (पूर्वी

भाग) तक विस्तारित क्षेत्र को पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमा-(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 10 मीटर से 50 मीटर तक विस्तृत है और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 3.12 वर्ग किलोमीटर है।

(2) सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध-I** के रूप में संलग्न है।

(3) सीमा विवरण और अक्षांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन को सीमांकित करते हुए सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **उपाबंध-IIक, उपाबंध-IIख** और **उपाबंध-IIग** के रूप में संलग्न है।

(4) सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य और पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **उपाबंध-III** की सारणी क और सारणी ख में दी गई है।

(5) मुख्य बिंदुओं पर भू-निर्देशांकों के साथ प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **उपाबंध-IV** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना- (1) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए, राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना बनाई जायेगी।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों, यदि कोई हों, के अनुसार बनायी जाएगी।

(3) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जाएगा, अर्थात्

- (i) पर्यावरण;
- (ii) वन और वन्यजीव;
- (iii) कृषि;
- (iv) राजस्व;
- (v) शहरी विकास;
- (vi) पर्यटन;
- (vii) ग्रामीण विकास;
- (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;
- (ix) नगरपालिका;
- (x) पंचायती राज;
- (xi) राजमार्ग;

(xii) त्रिपुरा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड; और

(xiii) लोक निर्माण विभाग।

(4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।

(5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नमी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

(6) आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का सहायक मानचित्र के साथ निर्धारण किया जाएगा। और प्रस्तावित भू-उपयोग की विशेषताओं का व्यौरा भी दिया जाएंगा।

(7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा और सारणी में यथासूचीबद्ध पैराग्राफ 4 में प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।

(8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।

(9) अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.- राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) भू-उपयोग.— (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद् वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, मानीटरी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा जैसे:-

(i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का संनिर्माण करना;

(ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;

(iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;

(iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार, और स्थानीय सुविधाएं तथा गृह वास; और

(v) पैराग्राफ-4 में उल्लिखित बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप:

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा।

(ग्व) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत-** आंचलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक जलमार्गों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और राज्य सरकार द्वारा जल आवाह प्रबंधन योजना इस रीति से बनाई जाएगी कि उसमें आवाह क्षेत्रों में विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध और निर्बंधित किया गया हो।

(3) **पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुज्ञात होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से राज्य पर्यटन विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना, आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना, पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के अध्ययन के आधार पर तैयार की जायेगी;

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे अर्थात् :-

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु यह, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुज्ञात होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकीविकास-शिक्षा और पारिस्थितिकी- पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्यावर संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा मानीटरी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल/ रिजॉर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का संनिर्माण अनुज्ञात नहीं होगा।

(4) **प्राकृतिक विरासत.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झारने, दर्दे, उपवन, गुफाएं, स्थल, बनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण.**— पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण के लिए विनियमों को कार्यान्वित किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण का वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार अनुपालन किया जाएगा।

(8) **बहिस्त्राव का निस्सारण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्त्राव का निस्सारण, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.**— ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबन्धन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के द्वारा प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा। अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन(ईएसएम)अनुज्ञात किया जायेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**— जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि. 343(अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप जैव-चिकित्सा अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जायेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि. 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि. 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(13) **ई-अपशिष्ट-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **सड़क-यातायात-** सड़क-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे और आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क-यातायात के अनुपालन की मानीटरी करेगी।

(15) **वाहन जनित प्रदूषण-** वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा और स्वच्छतर ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) **औद्योगिक इकाइयां-** (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी।

(ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुज्ञात होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) **पहाड़ी ढलानों का संरक्षण-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

(ख) विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों या अत्यधिक भू-क्षरण वाली ढलानों पर किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों जिसमें तटीय विनियमन जोन अधिसूचना, 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 शामिल है सहित वन) संरक्षण (अधिनियम, 1980) 1980 का (69, भारतीय वन अधिनियम, (16 का 1927) 1927, वन्यजीव) संरक्षण (अधिनियम 1972, (53 का 1972) तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

सारणी

क्र. सं. (1)	क्रियाकलाप (2)	टिप्पणी (3)
क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाईयां।	(क) वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें निजी उपयोग के लिए मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना और मकान बनाने और व्यक्तिगत उपभोग के लिए देशी टाइल्स या ईंटों का निर्माण करना भी सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और बृहत खनिज), पत्थर की खानें और उनकों तोड़ने की इकाईयां तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध होगा; (ख) खनन संक्रियाएं, माननीय उच्चतम न्यायालय की 1995 की रिट

		याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौड़ाबर्मन थिरमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सी) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में प्रचालित होंगी।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी: जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर- प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुज्ञात होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंसंकरण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिनावों का निस्सारण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।

ख.विनियमित क्रियाकलाप

8.	होटलों और रिसोर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण के सिवाय, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी। परन्तु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार इनमें जो भी अधिक निकट हो, सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार करने की अनुज्ञा होगी।
9.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार का वाणिज्यिक संनिर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा: परन्तु स्थानीय लोगों को पैराग्राफ 3 के उप पैराग्राफ (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित उनके उपयोग के लिए उनकी भूमि में स्थानीय निवासियों की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने लिए संनिर्माण करने की अनुमति भवन उपविधियों के अनुसार दी जाएगी। परन्तु यह भी कि ऐसे लघु उद्योगों जो प्रदूषण उत्पन्न नहीं करते हैं, से

		<p>संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से ही न्यूनतम पर रखे जाएंगे।</p> <p>(ख) एक किलोमीटर से आगे आंचलिक महायोजना की अनुसार विनियमित होंगे।</p>
10.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	<p>फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागबानी या कृषि आधारित उद्योग, जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाते हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।</p>
11.	वृक्षों की कटाई।	<p>(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी।</p> <p>(ख) वृक्षों की कटाई केन्द्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपरांधों के अनुसार विनियमित होगी।</p>
12.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
13.	विद्युत और संचार टाँवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा। (भूमिगत केबल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा)।
14.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों, नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
15.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों, नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
16.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
17.	पहाड़ी ढालों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
18.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
19.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागबानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्त्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होंगे।
20.	फर्मों, कारपोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुकुट फर्मों की स्थापना।	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने को छोड़कर लागू विधियों के अधीन विनियमित (अन्यथा प्रावधान को छोड़कर किए गए) होंगे।

21.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्साव का निस्सारण ।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्साव के निस्सारण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्क्रिया और पुनरुपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्साव का निस्सारण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
22.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक प्रयोग एवं निष्कर्षण ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
23.	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
24.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
25.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
26.	पोलिथीन बैगों का प्रयोग ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
27.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग का प्रयोग ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।

ग. संबंधित क्रियाकलाप

28.	वर्षा जल संचय ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
29.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
30.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग ।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	कृषि वानिकी ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	कौशल विकास ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

5. पारिस्थितिकी-संबंदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति-। इस अधिसूचना के प्रावधानों की प्रभावी निगरानी के लिए केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) द्वारा, प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एक निगरानी समिति का गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात्:-

क्र.स.	मानीटरी समिति का गठन	पदनाम
(i)	संबंधित जिला कलेक्टर, बीशलगढ़	पदेन अध्यक्ष;
(ii)	क्षेत्र में एक पारिस्थितिकी विज्ञान शास्त्री	सदस्य;
(iii)	पशु संसाधन विकास विभाग बीशलगढ़ का प्रतिनिधि	सदस्य;
(iv)	राज्य सरकार द्वारा नामित किए जाने वाले वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन का प्रतिनिधि	सदस्य;

(v)	राज्य सरकार द्वारा नामित जैव विविधता में एक विशेषज्ञ	सदस्य;
(vi)	राज्य लोक निर्माण विभाग का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
(vii)	राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
(viii)	वन्यजीव वार्डन, सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य	सदस्य-सचिव।

6.विचारार्थ विषय:- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनर्गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

(3) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित क्रियाकलापों और इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध गतिविधियों के सिवाय आने वाले ऐसे क्रियाकलापों की दशा में वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति लेने के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट की जाएगी।

(4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के सिवाय, भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना के अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त या संबंधित उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम की धारा 19 के अधीन परिवाद दायर करने के लिए सक्षम होगा।

(6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।

(7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, उपांत्ति V में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।

(8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।

7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।

8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अध्यधीन होंगे।

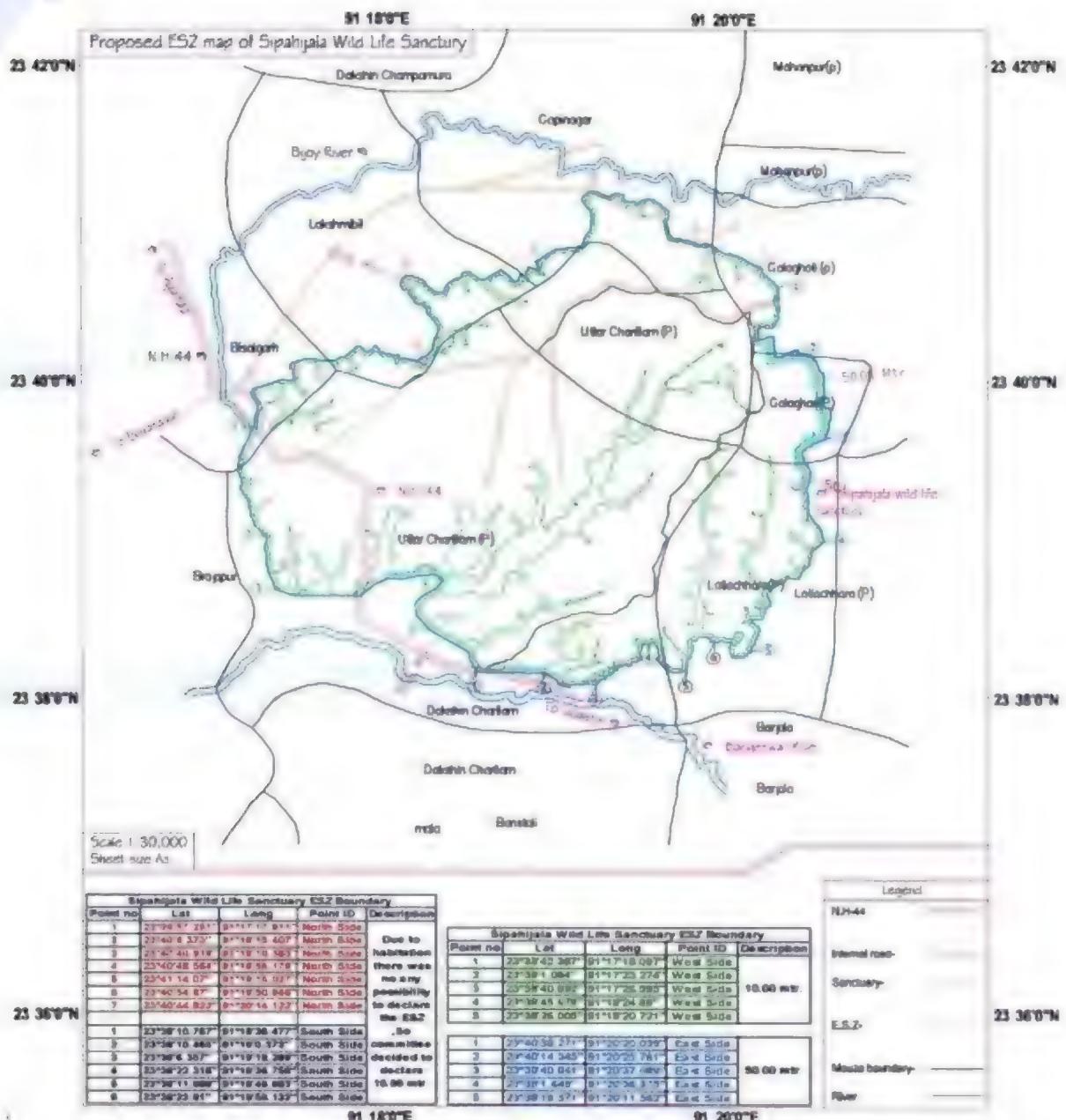
[फा. सं. 25/37/2018-ईएसजे८]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

त्रिपुरा राज्य में सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

उत्तर	सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन का उत्तरी भाग गोपीनगर मौजा के अंतर्गत और चंद्रा नगर और कस्बा गांव पंचायत के अंतर्गत आता है। बीजोय नदी उत्तरी भाग में बहती है जो कि सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मानचित्र में दर्शाया गया है। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के उत्तर पश्चिमी भाग अंतर्गत बीशलगढ़ नगर पंचायत और रौतखलागांव पंचायत आते हैं। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के उत्तर पश्चिमी भाग में अत्यंत घनी आबादी है। यहां यह प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए अभयारण्य सीमा से 10 मीटर में रखा गया है। यह क्षेत्र बीशलगढ़ मौजा के अंतर्गत आता है।
पश्चिमी सीमा	सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन का उत्तर पश्चिमी भाग अंतर्गत बीशलगढ़ नगर पंचायत और रौतखलागांव पंचायत आते हैं। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के उत्तर पश्चिमी भाग में अत्यंत घनी आबादी है। यहां यह प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए अभयारण्य सीमा से 10 मीटर में रखा गया है। यह क्षेत्र बीशलगढ़ मौजा के अंतर्गत आता है।
पश्चिमी सीमा	सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन का पश्चिमी भाग ब्रजापुर और उत्तर चरीलम गांव पंचायत के भाग के अंतर्गत आता है। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के पश्चिमी भाग में आबादी घनी है। यहां यह प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए अभयारण्य सीमा से 10 मीटर में रखा गया है। यह क्षेत्र ब्रजापुर और उत्तर, चरीलम मौजा के भाग के अंतर्गत आता है। रेलवे ट्रैक बिछाई गई है जो कि सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य की निकटतम पश्चिमी सीमा से लगभग 500 मीटर है।
दक्षिणी सीमा	सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन का दक्षिणी भाग लतियाचेरा, एवं चीकन ए डी सी ग्राम एवं उत्तर चरीलम मौजा के अंतर्गत आता है। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के दक्षिणी भाग में जनसंख्या घनी है। यहां यह प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए अभयारण्य सीमा से 10 मीटर में रखा गया है। यहां एक बाजार है जिसे चरीलम बाजार कहा जाता है जो कि अभयारण्य की निकटतम सीमा से लगभग 100 मीटर है।
पूर्वी सीमा	सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन का पूर्वी भाग गोलाघाटी के भाग और लतियाचेरा मौजा के भाग और लतियाचेरा और चीकन ए डी सी ग्राम के अंतर्गत आता है। सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के पूर्वी भाग में जनसंख्या विश्वल है। यहां यह प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए अभयारण्य सीमा से 50 मीटर में रखा गया है।

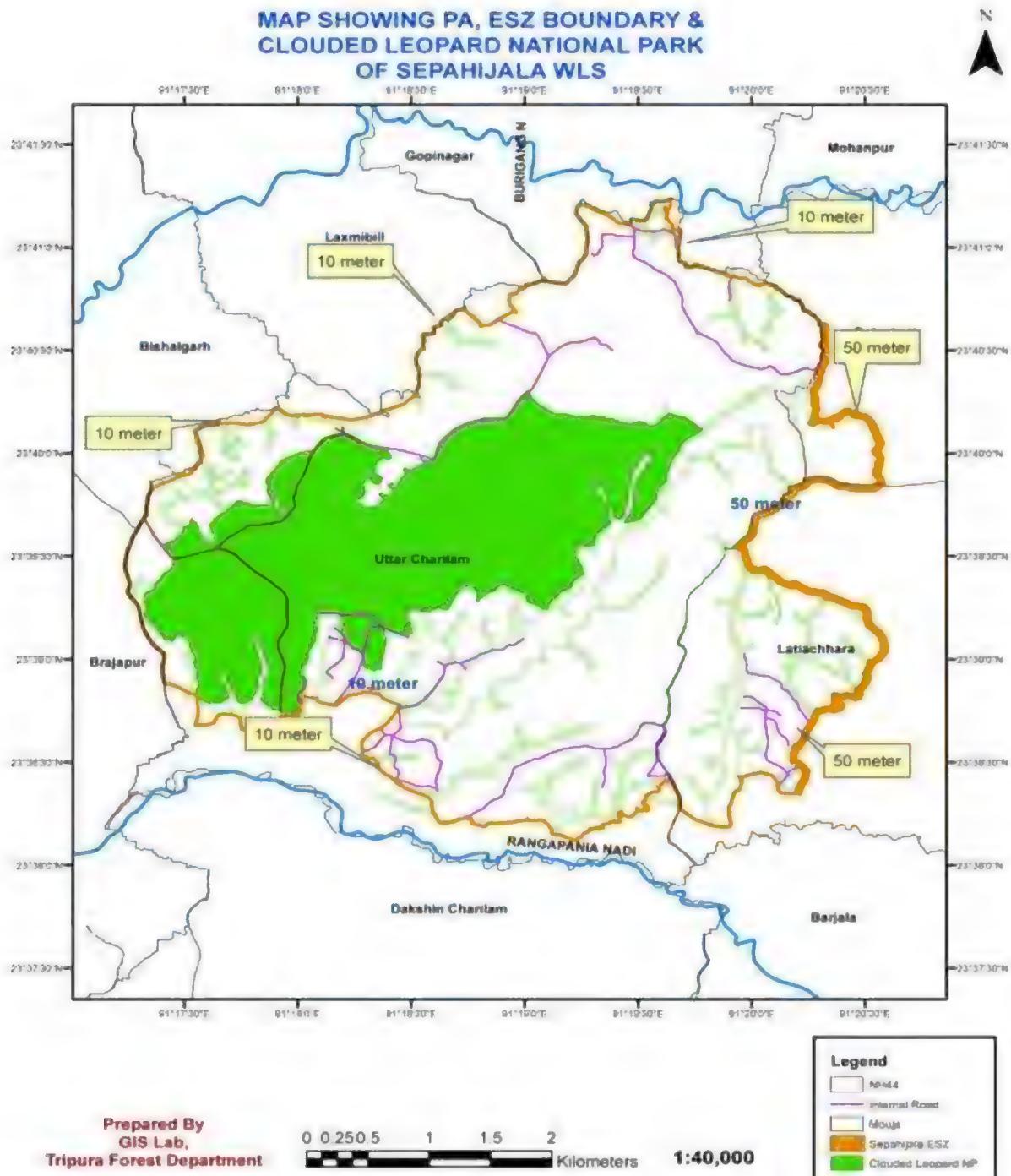
उपाबंध- ॥१॥
मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ सेपाहीजाला वन्यजीव अभ्यारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



Wildlife Wardan,
Sepahijala Wildlife Sanctuary

उपांध- ॥५

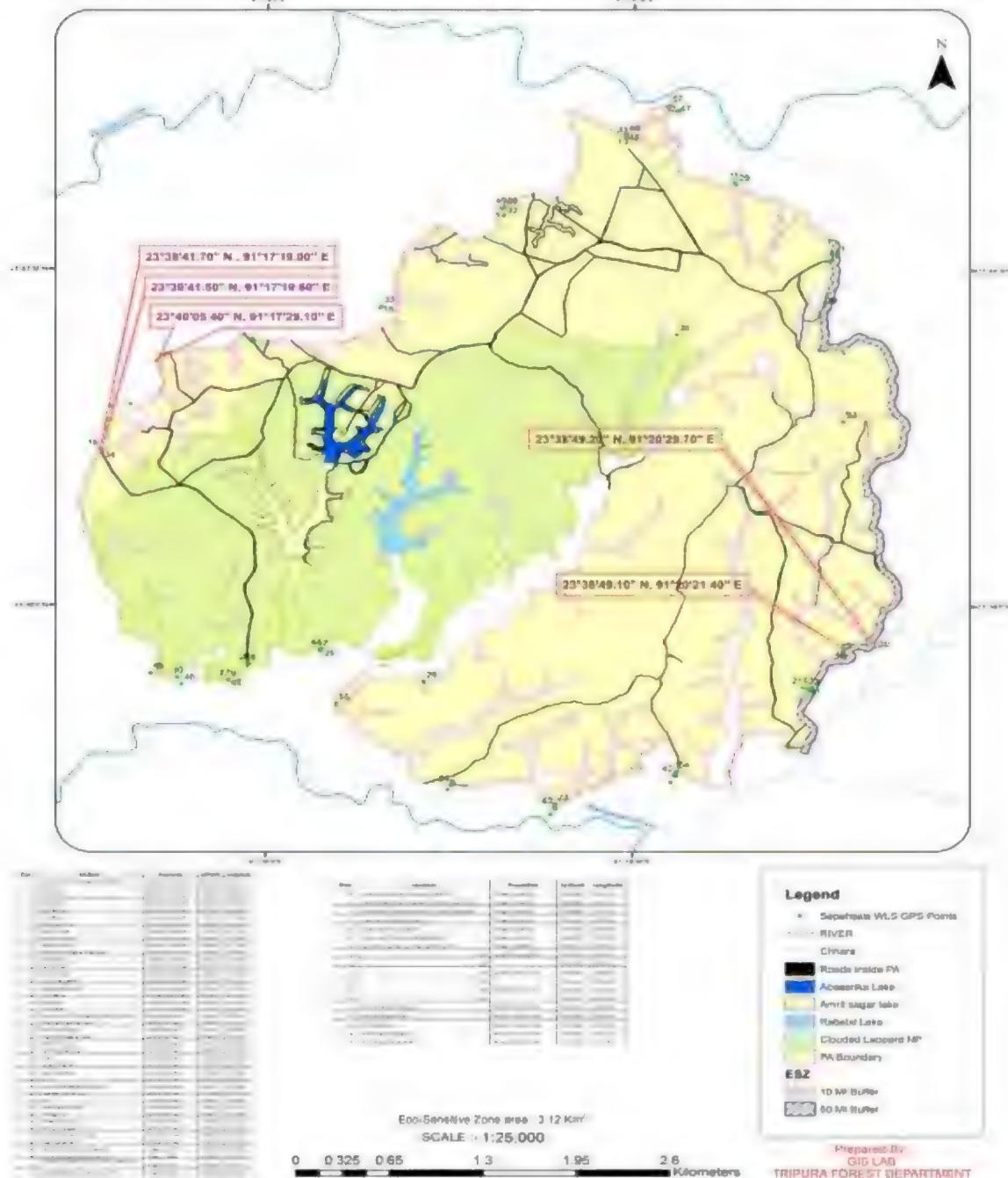
मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ सेपाहिजाला वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का
मानचित्र



उपांध-IIग

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र

MAP SHOWING SEPAHIJALA WLS AND ECO-SENSITIVE ZONE



उपांध-III

सारणी क : मानचित्र पर चिन्हित सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

क्र.सं.	वन्यजीव अभयारण्य सीमा में यादृच्छिक बिंदु	जीपीएस निर्देशांक
1.	ब्रिक सोलिंग सड़क (गोलाघाटी सड़क)	उ-23.40-32.5' पू-091.20-17.7'
2.	दुखी राम ठाकुर पारा आंगनवाडी केंद्र, चीकनचेरा	उ-23.38-49.2' पू-091.20-29.7'
3.	मुसलिम पारा आंगनवाडी केंद्र	उ-23.38-38.2' पू-091-20-11.7'
4.	फकीरा मुरा एस/ बी स्कूल	उ-23.38-15.6' पू-091.19-40.7'
5.	पम्प हाउस गोलाघाटी कोलोनी	उ-23.38-06.9' पू-091.19-11.0'
6.	चारीलम XII स्कूल	उ-23.38-11.9' पू-091.18-45.5'
7.	इकबाल हाउस उत्तर मुरा	उ-23.38-48.5' पू-091.18-13.6'
8.	जुरकाबर	उ-23.38-44.4' पू-091.17-55.7'
9.	चारीलम रेंज ऑफिस	उ-23.38-40.1' पू-091.17-50.8'
10.	हापाजीयामुरा मस्जिद	उ-23.38-39.6' पू-091.18-38.7'
11.	लम्बा वृक्ष	उ-23.40-52.9' पू-091.19-55.1'
12.	ब्रिक सोलिंग, बृजागोपाल सिन्हा, कस्बा	उ-23.40-12.7' पू-091.19-40.5'
13.	धाजानगर, 4 सं. अभयारण्य	उ-23.41-05.8' पू-091.19-27.9'
14.	पोस्ट	उ-23.40-46.6' पू-091.18-58.1'
15.	चंद्रानगर पम्प हाउस	उ-23.40-20.1' पू-091.18-28.1'
16.	एन एच 44	उ-23.39-41.5' पू-091.17-19.6'
17.	बिशलगढ़ वन बिंदु	उ-23.39-49.6' पू-091.17-21.7'

18.	विद्युत पोस्ट, जंगलिया	उ-23.39-53.3' पू-091.17-21.7'
19.	विद्युत पोस्ट नारायण दास हाउस	उ-23.40-05.4' पू-091.17-29.1'
20.	नोरायरा कबरखाना	उ-23.40-10.9' पू-091.17-56.9'

सारणी ख : सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य अवस्थानों के अतिरिक्त भू-निर्देशांक

अभयारण्य सीमा	
मुख्य विशेषताओं के नाम	जी पी एस निर्देशांक
ब्रीक सोलिंग सड़क (गोलाधाटी सड़क)	उ-23.40-32.5' पू-091.20-17.7'
दुखी राम ठाकुर पारा आंगनवाडी केन्द्र, चीकनचेरा	उ-23.38-49.2' पू-091.20-29.7'
मुसलिम पारा आंगनवाडी केन्द्र	उ-23.38-38.2' पू-091-20-11.7'
फकीरा मुरा एस/ बी स्कूल	उ-23.38-15.6' पू-091.19-40.7'
पम्प हाउस गोलाधाटी कोलोनी	उ-23.38-06.9' पू-091.19-11.0'
चारीलम XII स्कूल	उ-23.38-11.9' पू-091.18-45.5'
इकबाल हाउस उत्तर मुरा	उ-23.38-48.5' पू-091.18-13.6'
जुरकाबर	उ-23.38-44.4' पू-091.17-55.7'
चारीलम रेंज ऑफिस	उ-23.38-40.1' पू-091.17-50.8'
हापाजीयामुरा मस्जिद	उ-23.38-39.6' पू-091.18-38.7'

सारणी ग: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

पारिस्थितिकी संवेदी जोन सीमा		
क्र.सं.	मुख्य विशेषताओं के नाम	जी.पी.एस निर्देशांक
1.	ब्लैक टॉप सड़क- (दक्षिण गोलाघाटी से सेपाहीजाला)	उ-23.40-34.0' पू-091.20-19.9'
2.	विद्युत पोस्ट	उ-23.38-48.8' पू-091.20-21.7'
3.	मंटू मिया हाउस	उ-23.38-38.0' पू-091.20-13.9'
4.	विद्युत पोस्ट(2)	उ-23.38-12.8' पू-091.19-39.4'
5.	राजमार्ग सं 44	उ-23.38-04.1' पू-091.19-09.9'
6.	राजमार्ग सं 44	उ-23.38-10.7' पू-091.18-44.6'
7.	संतुश पॉल हाउस	उ-23.38-47.9' पू-091.18-13.2'
8.	मनू फकीर दरगा	उ-23.38-44.2' पू-091.17-55.5'
9.	अब्दुल ख्लैक हाउस	उ-23.38-39.9' पू-091.17-50.7'
10.	हापाजीमुरा स्कूल	उ-23.38-38.9' पू-091.17-39.3'
11.	ब्लैक टॉप सड़क गोलाघाटी से बीशलगढ़	उ-23.40-53.5' पू-091.19-54.6'
12.	काजल दास हाउस	उ-23.41-12.8' पू-091.19-40.9'
13.	ब्लैक टॉप सड़क	उ-23.41-06.3' पू-091.19-28.1'
14.	रोसीद मिया हाउस	उ-23.40-46.5' पू-091.18-57.6'
15.	पम्प ऑपरेटर, क्लाटर	उ-23.40-19.8' पू-091.18-27.8'
16.	ब्रजापुर ब्लैक टॉप सड़क	उ-23.39-41.7' पू-091.17-19.0'

17.	एन एच-44	उ-23.39-49.7' पू-091.17-21.2'
18.	ब्रीक सोलिंग	उ-23.39-53.9' पू-091.17-26.5'
19.	ब्लैक टॉप सड़क, जंगलिया कलानी	उ-23.40-05.5' पू-091.17-28.8'
20.	नूर मिया हाउस	उ-23.40-11.4' पू-091.17-56.2'

उपांग-IV

भू-निर्देशांकों के साथ सेपाहीजाला वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची

क्र.सं.	ग्रामों के नाम (पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत)	जी.पी.एस निर्देशांक
1.	बबुल मरक, गरो कॉलोनी, गोलाघाटी -जीपी	उ-23.40-20.1' पू-091.20-16.6'
2.	रबीद्र देव्बारमा, राम कृष्णा पारा, लतियाचेरा - जीपी	उ-23.39-37.0' पू-091.20-09.5'
3.	कुला चंद्रा देव्बारमा, चिकनचेरा - जीपी	उ-23.38-49.1' पू-091.20-21.4'
4.	नूरानालाई मिया, चिकनचेरा, मुसलिम पारा, चिकनचेरा - जीपी	उ-23.38-38.0' पू-091.20-12.8'
5.	जॉयनल मिया, फकीरामुरा, उत्तर चरीलम - जीपी	उ-23.38-14.6' पू-091-19-40.2'
6.	हारालालकर, गौतम कलानी, उत्तर चरीलम - जीपी	उ-23.38-05.9' पू-091.19-10.8'
7.	संतोष पाँल हाउस, उत्तर मुरा, अरालिया- जीपी	उ-23.38-48.3' पू-091.18-13.3'
8.	अब्दुल खालक हाउस, हापाजियामुरा, उत्तर चरीलम - जीपी	उ-23.38-39.9' पू-091.17-50.7'
9.	हापाजियामुरा स्कूल, हापाजियामुरा उत्तर चरीलम - जीपी	उ-23.38-38.9' पू-091.17-39.3'

10.	काजल दास, घोषपारा, कस्बा - जीपी	उ-23.41-12.7' पू-091.19-40.6'
11.	ब्रजा गोपा सिन्हा, कस्बा - जीपी	उ-23.41-05.8' पू-091.19-27.9'
12.	धाजा नगर, पुरबो टिल्ला, बैद्यरदिघी - जीपी	उ-23.40.46.7' पू-091.18-57 .9'
13.	नुरमिया हाउस, नाराउरा टिल्ला, रौथखोला - जीपी	उ-23.40-11.4' पू-091.17-56.2'

उपाबंध-V

की गई कार्रवाई की रिपोर्ट का प्रारूप:

- बैठकों की संख्या और तारीख ।
- बैठकों का कार्यवृत्तः (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का उल्लेख करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में प्रस्तुत करें) ।
- पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति।
- भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सारांश (पारिस्थितिकी संवेदी जोन वार) । व्यौरे उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं।
- पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सारांश। (व्यौरे एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।
- पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सारांश। (व्यौरे एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।
- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सारांश ।
- कोई अन्य महत्वपूर्ण विषय ।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
NOTIFICATION

New Delhi, the 24th July, 2020

S.O. 2437(E).—The following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at esz-mef@nic.in

Draft Notification

WHEREAS, Sepahijala Wildlife Sanctuary located in Sepahijala district of Tripura was declared on 2nd February, 1987 *vide* notification No F. 8(50)/For-WL/86/55164 dated 2nd February 1987 under section 18(1) of the Wildlife (Protection) Act, 1972 covering an area of 18.54 square kilometers. Within the core area of the Sanctuary, an area of 5.08 square kilometer was declared as Clouded leopard National Park *vide* notification No F.8 (196)/For- WL-2004INP/33856-86 dated 24th January, 2008. Now all restrictions have been implied with the Sanctuary and National Park there no activities by the local public or anybody is allowed unless permitted by the Chief Wildlife Warden, Tripura as per provision of Wildlife (Protection), Act 1972;

AND WHEREAS, the Sanctuary has varieties of flora and fauna e.g. Phayre's langur and clouded leopard besides presence of Rhesus macaque, pig-tailed macaque, capped langur, barking deer, wild boar, jackal, porcupine, etc. Four species of civet, leopard cat, jungle cat, pangolin, slow loris, large Indian civet, small India civet, common palm civet, Himalayan palm civet, flying squirrel, crab eating mongoose, yellow throated marten, Indian monitor lizard etc. Apart from the above birds like imperial pigeon, kalij pheasant, dongs, red jungle fowl, pied hornbill, spotted dove, kingfisher, parakeet, Indian roller, kite, whistling teals, open bill stork, cormorant, red wattled lapwing etc. are also found;

AND WHEREAS, about 124 bird species have been identified at Sepahijala Wildlife Sanctuary. The Sanctuary have large number of water bodies covering an area of 120.50 ha (52 nos.) out of which Amrit sagar (25.35 ha) and Ratiabill (20.75 ha) are the large sized which adds to aquatic bio-diversity. The flora consists of 142 species of trees, 55 species of shrubs, 90 species of herbs, 35 species of climbers, 11 species of epiphytes, 10 species of pteridophytes, 7 species of bamboos. Some example of major species are *Shorea robusta*, *Cassia species*, *Artocarpus chaplasa*, *Schima wallichii*, *Syzygium curranii*, *Lagerstroemia species*, *Terminalia species*, *Albezia species*, *Mallotus*, *Dillenia*, *Bauhinia species*, *Ficusspecies*, *Linnea species*, *Dipterocarpus tarbinatus*, *Vitex*, *Alstonia scholaris*, *Mesua ferrea*, *Bombax ceiba*, etc;

AND WHEREAS, the Sanctuary is rich in bio-diversity values including bio-geographical representatives, endemism, species richness, geo-morphological characteristics and unique land use practices including aesthetic and cultural values. The Sanctuary has rare, endangered and threatened (RET) species examples include clouded leopard (*Neofelis nebulosa*), hornbill (*Anthracoceros coronatus*), monitor lizard (*Varanus bengalensis*), porcupine (*Antherurusmecourus assamensis*), civets (*Himalayan palm civets*), etc;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Sepahijala Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from 10 metres (in North, North-western, West and South) to 50 meters (Eastern side) around the boundary of Sepahijala Wildlife Sanctuary, in Sepahijala district in the State of Tripura as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

2. **Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.** – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of 10 metres to 50 metres around the boundary of Sepahijala Wildlife Sanctuary and the area of the Eco-sensitive Zone is 3.12 square kilometres.
(2) The boundary description of Sepahijala Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I**.
(3) The maps of the Sepahijala Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA**, **Annexure-IIB**, and **Annexure-IIC**.
(4) List of geo-coordinates of the boundary of Sepahijala Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table **A** and Table **B** of **Annexure III**.
(5) The list of villages falling in the proposed Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IV**.
2. **Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.** – (1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the competent authority of State.
(2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
(3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-
 - (i) Environment;
 - (ii) Forest and Wildlife;
 - (iii) Agriculture;
 - (iv) Revenue;
 - (v) Urban Development;
 - (vi) Tourism;
 - (vii) Rural Development;
 - (viii) Irrigation and Flood Control;
 - (ix) Municipal;
 - (x) Panchayati Raj;
 - (xi) Highways; and
 - (xii) Tripura State Pollution Control Board.
 - (xiii) Public Works Department.
(4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
(5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.
(6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.
(7) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.
(8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
(9) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.
3. **Measures to be taken by the State Government.** – The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-

(1) Land use.— (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purposes other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and *vide* provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:-

- (i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
- (ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
- (iii) small scale industries not causing pollution;
- (iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
- (v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

(b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

(2) Natural water bodies.—The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) Tourism or Eco-tourism.— (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

(b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.

(c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.

(d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.

(e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-

(i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

(ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

(iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific

scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

- (4) **Natural heritage.**- All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.
- (5) **Man-made heritage sites.**- Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.
- (6) **Noise pollution.** - Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.
- (7) **Air pollution.**- Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be compiled in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.
- (8) **Discharge of effluents.**- Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.
- (9) **Solid wastes.**- Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-
 - (a) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;
 - (b) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.
- (10) **Bio-Medical Waste.**- Bio-Medical Waste Management shall be as under:-
 - (a) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 343 (E), dated the 28th March, 2016.
 - (b) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.
- (11) **Plastic waste management.**- The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.
- (12) **Construction and demolition waste management.**- The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.
- (13) **E-waste.**- The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.
- (14) **Vehicular traffic.**- The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.
- (15) **Vehicular pollution.**- Prevention and control of vehicular pollution shall be incompliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.

(16) Industrial units.— (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.

(ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.

(17) Protection of hill slopes.— The protection of hill slopes shall be as under:-

(a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;

(b) construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall not be permitted.

4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.— All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
A. Prohibited Activities		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	<p>(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for manufacture of country tiles or bricks for housing and for personal consumption;</p> <p>(b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.</p>
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	<p>New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted:</p> <p>Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.</p>
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
B. Regulated Activities		
8.	Commercial establishment of hotels and resorts.	<p>No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities:</p> <p>Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.</p>
9.	Construction activities.	<p>(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:</p> <p>Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents.</p> <p>Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
10.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
11.	Felling of trees.	<p>(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the Competent Authority in the State Government.</p> <p>(b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.</p>
12.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
13.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).
14.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulations available guidelines.
15.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
16.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
17.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
18.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
19.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
20.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.
21.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
22.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
23.	Solid waste management.	Regulated as per the applicable laws.
24.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
25.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
26.	Use of polythene bags.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.

C. Promoted Activities

28.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
29.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
30.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
31.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
32.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
33.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
34.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.
35.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
36.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
37.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
38.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.

5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.— For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:-

Sl. No.	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	Concerned District Collector, Bishalgarh	Chairman, ex officio
(ii)	An Ecologist in the field	Member;
(iii)	A representative of Animal Resource Development Dept. Bishalgarh	Member;
(iv)	A representative of Non-government Organisation working in the field of wildlife conservation to be nominated by State Government	Member;
(v)	An expert in Biodiversity nominated by the State Government	Member;
(vi)	A representative from State Public Works Department	Member;
(vii)	A representative from State Pollution Control Board	Member;
(viii)	Wildlife Warden, Sepahijala Wildlife Sanctuary	Member-Secretary.

6. Terms of reference. – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

- (2) The tenure of the Monitoring committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the State Government.
- (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under **paragraph 4** thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
- (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
- (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.
- (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
- (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure V.
- (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/37/2018-ESZ]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

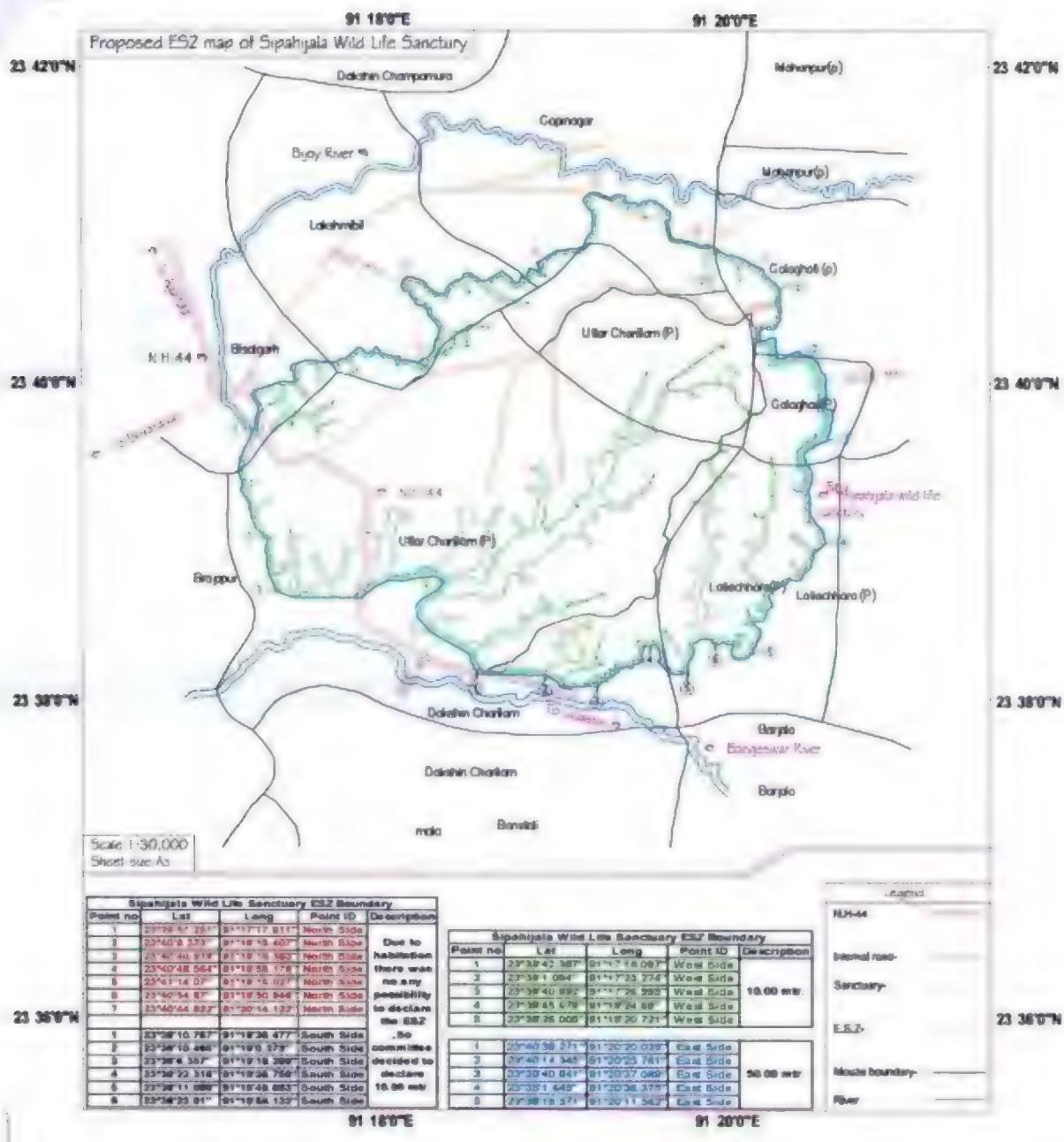
ANNEXURE- I

BOUNDARY DESCRIPTION OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECOSENSITIVE ZONE IN THE STATE TRIPURA

North	Northern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary falls under Gopinagar mouja and under Chandra nagar and Kasba Gao Panchayat. River Bijoy flows in the northern side which has been 'shown in the Map of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary. Population in Northern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary is densely populated. Here it is kept 10 meters from sanctuary boundary for proposed Eco-sensitive Zone.
North Western Boundary	North Western side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary falls under Bishalgarh Nagar Panchayat and Routkhalagao panchayat. Population in North western side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary is highly dense populated. Here it is kept 10 meters from sanctuary boundary for proposed ESZ. The area is falls under Bishalgarh Mouja.
Western boundary	Western side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary falls under Brajapur and part of North Charilam Gao Panchayat. Population in Western side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary is densely populated. Here it is kept 10 meters from sanctuary boundary for proposed ESZ. The area is falls under Brajapur and part of North Chari lam mouja. Railway track has been laid which is about 500meters from the nearest western boundary of Sepahijala Wildlife Sanctuary.
Southern boundary	Southern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary falls under Latiacherra, &Chickan ADC village & North Charilam GP and Latiacherra mouja & North Charilam mouja. Population in Southern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary is densely populated. Here it is kept 10 meters from sanctuary boundary for proposed ESZ. There is a market called chari lam bazaar which is about 100 meter from the nearest Sanctuary boundary.
Eastern boundary	Eastern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary falls under part of Golagaghati and part of Latiacherramouja and under Latiacherra and Chickan ADC village. Population in Eastern side of proposed Eco-sensitive Zone of Sepahijala Wildlife Sanctuary is sparsely populated. Here it is kept 50 meters from sanctuary boundary for proposed Eco-sensitive Zone.

ANNEXURE- IIA

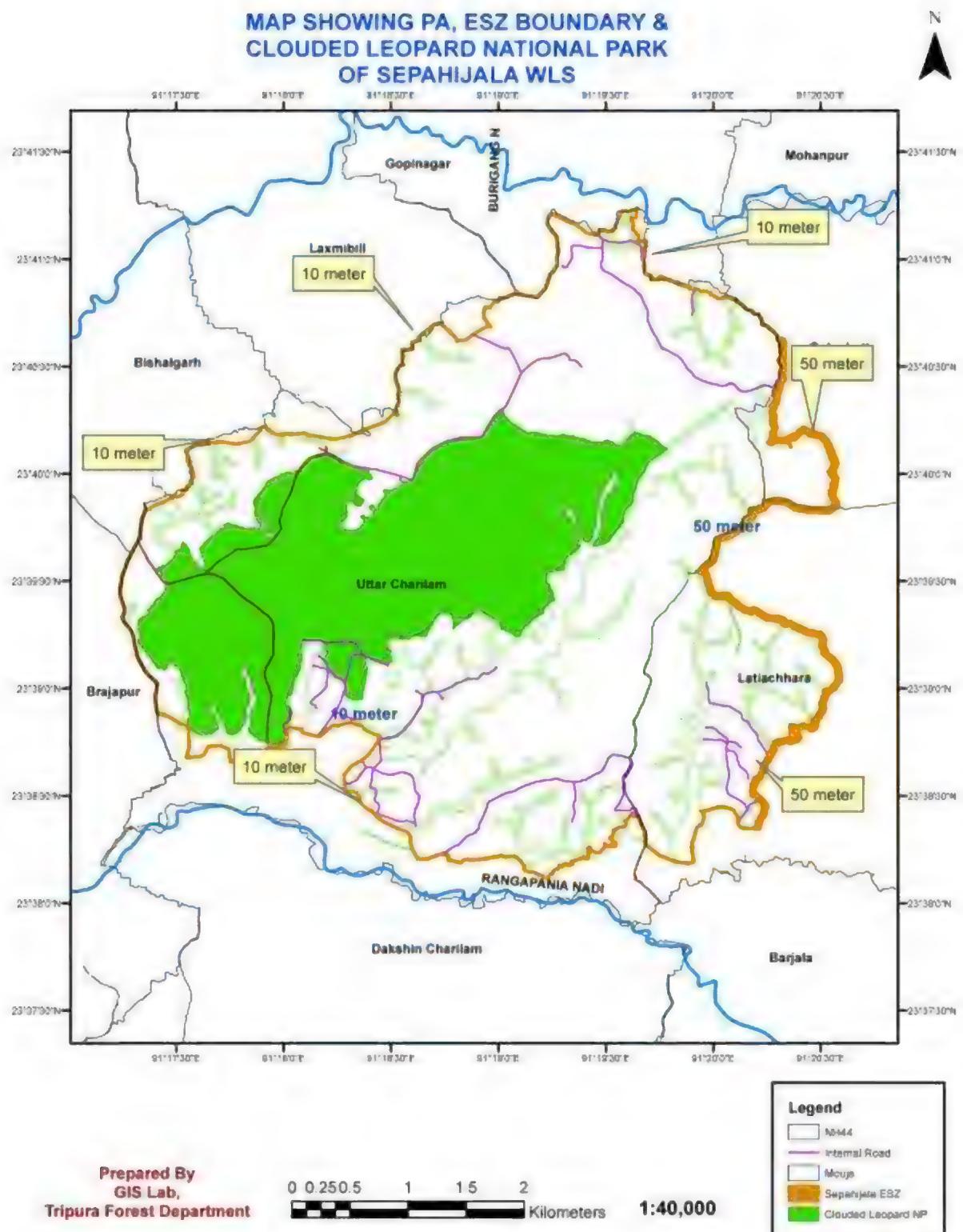
MAP OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECO-SENSITIVE ZONE ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



Wildlife Warden,
Sepahijala Wildlife Sanctuary

ANNEXURE- IIB

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



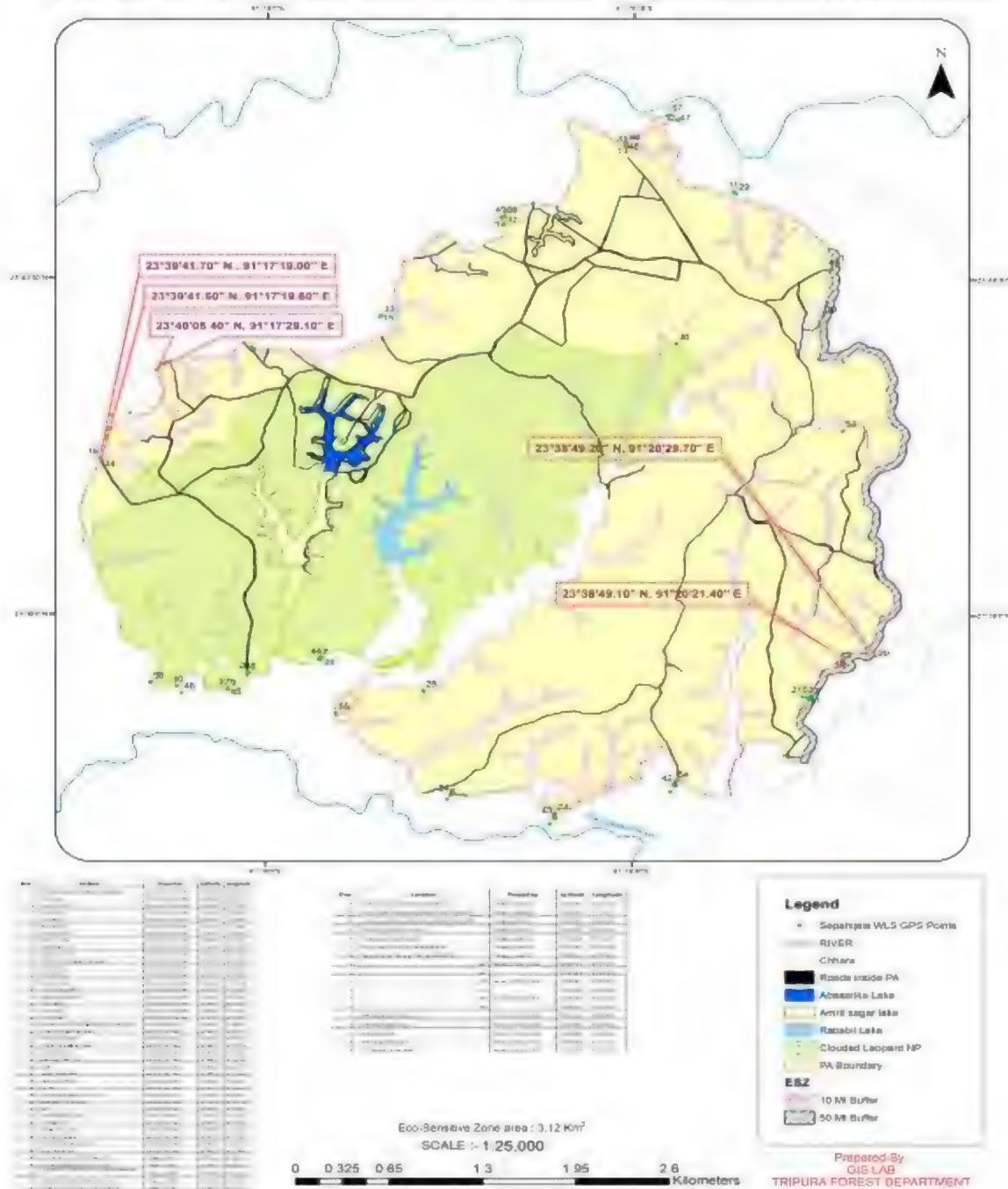
Prepared By
GIS Lab,
Tripura Forest Department

0 0.25 0.5 1 1.5 2 Kilometers 1:40,000

ANNEXURE- IIC

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS

MAP SHOWING SEPAHIJALA WLS AND ECO-SENSITIVE ZONE



ANNEXURE-III

TABLE A: GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY MARKED ON THE MAP

SI No	Random Points in Wildlife Sanctuary Boundary	GPS Reading
1.	Bricks soling Road (Golaghati Road)	N-23.40-32.5' E-091.20-17.7'
2.	Dukhi Ram Thakur Para Anganwary Kendra, Cikanchera	N-23.38-49.2'

		E-091.20-29.7'
3.	Muslim para Anganwary Kendra	N-23.38-38.2' E-091.20-11.7'
4.	Fakira mura S/B School	N-23.38-15.6' E-091.19-40.7'
5.	Pump House Golaghati Koloni	N-23.38-06.9' E-091.19-11.0'
6.	Charilam XII School	N-23.38-11.9' E-091.18-45.5'
7.	Ekbal House Uttar mura	N-23.38-48.5' E-091.18-13.6'
8.	Jurkabar	N-23.38-44.4' E-091.17-55.7'
9.	Charilam Range Office	N-23.38-40.1' E-091.17-50.8'
10.	Hapajamura Masjid	N-23.38-39.6' E-091.18-38.7'
11.	Tall Tree	N-23.40-52.9' E-091.19-55.1'
12.	Bricks Soling, Brajagopal Sinha, Kasba	N-23.40-12.7' E-091.19-40.5'
13.	Dhajanagar, 4 no Sanctuary	N-23.41-05.8' E-091.19-27.9'
14.	Post	N-23.40-46.6' E-091.18-58.1'
15.	Chandranagar Pump House	N-23.40-20.1' E-091.18-28.1'
16.	NH44	N-23.39-41.5' E-091.17-19.6'
17.	Bishalgarh Forest Drop	N-23.39-49.6' E-091.17-21.7'
18.	Electric Post, jangalia	N-23.39-53.3' E-091.17-21.7'
19.	Electric Post Narayan Das's House	N-23.40-05.4' E-091.17-29.1'
20.	Norayra Kabarkhala	N-23.40-10.9' E-091.17-56.9'

TABLE B: ADDITIONAL GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF SEPAHIJALA WILDLIFE SANCTUARY

Sanctuary Boundary	
Name of Prominent Features	GPS Reading
Bricks soling Road (Golaghati Road)	N-23.40-32.5' E-091.20-17.7'
Dukhi Ram Thakur Para Anganwary Kendra, Cikanchera	N-23.38-49.2' E-091.20-29.7'
Muslim para Anganwary Kendra	N-23.38-38.2' E-091.20-11.7'
Fakira mura S/B School	N-23.38-15.6' E-091.19-40.7'
Pump House Golaghati Koloni	N-23.38-06.9' E-091.19-11.0'

Charilam XII School	N-23.38-11.9' E-091.18-45.5'
Ekbal House Uttar mura	N-23.38-48.5' E-091.18-13.6'
Jurkabar	N-23.38-44.4' E-091.17-55.7'
Charilam Range Office	N-23.38-40.1' E-091.17-50.8'
Hapajiamura Masjid	N-23.38-39.6' E-091.18-38.7'

TABLE C: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

Eco-sensitive Boundary		
SL No	Name of Prominent features	GPS Reading
1.	Black Top Road- (South Golaghati to Sepahijala)	N-23.40-34.0' E-091.20-19.9'
2.	Electric Post	N-23.38-48.8' E-091.20-21.7'
3.	Mantu Mia's House	N-23.38-38.0' E-091.20-13.9'
4.	Electric Post (2)	N-23.38-12.8' E-091.19-39.4'
5.	44 no High way	N-23.38-04.1' E-091.19-09.9'
6.	44 no High way	N-23.38-10.7' E-091.18-44.6'
7.	Santush Paul House	N-23.38-47.9' E-091.18-13.2'
8.	Manu Fakir Darga	N-23.38-44.2' E-091.17-55.5'
9.	Abdul Khalek House	N-23.38-39.9' E-091.17-50.7'
10.	Hapajiamura School	N-23.38-38.9' E-091.17-39.3'
11.	Black Top Road Golaghati to Bishalgarh	N-23.40-53.5' E-091.19-54.6'
12.	Kajal Das House	N-23.41-12.8' E-091.19-40.9'
13.	Black Top Road	N-23.41-06.3' E-091.19-28.1'
14.	Rosid mia House	N-23.40-46.5' E-091.18-57.6'
15.	Pump Operator, Quarter	N-23.40-19.8' E-091.18-27.8'
16.	Brajapur black top Road	N-23.39-41.7' E-091.17-19.0'
17.	NH-44	N-23.39-49.7' E-091.17-21.2'
18.	Brick Soling	N-23.39-53.9' E-091.17-26.5'

19.	Black Top Road, Jangalia Kalani	N-23.40-05.5' E-091.17-28.8'
20.	Nur Mia's House	N-23.40-11.4' E-091.17-56.2'

ANNEXURE-IV

**LIST OF VILLAGES COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF SEPAHIJALA WILDLIFE
SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES**

SL No	Name of Villages (Inside Eco-sensitive Zone)	GPS Reading
1.	Babul Marak, Garo Colony, Golaghati - GP	N-23.40-20.1' E-091.20-16.6'
2.	Rabindra Debbarma, Ram Krishna Para, Latiacherra - GP	N-23.39-37.0' E-091.20-09.5'
3.	Kula Chandra Debbarma, Chikanchera - GP	N-23.38-49.1' E-091.20-21.4'
4.	Nuranalai Mia, Chikanchera, Muslim Para, Chikancherra - GP	N-23.38-38.0' E-091.20-12.8'
5.	Joynal Mia, Fakiramura, North Charilam - GP	N-23.38-14.6' E-091.19-40.2'
6.	Haralal Kar, Goutam Kalani, North Charilam - GP	N-23.38-05.9' E-091.19-10.8'
7.	Santosh Paul House, Uttarmura, Aralia - GP	N-23.38-48.3' E-091.18-13.3'
8.	Abdul Khalak House, Hapajiamura, North Charilam - GP	N-23.38-39.9' E-091.17-50.7'
9.	Hapajiamura School, Hapajiamura, North Charilam - GP	N-23.38-38.9' E-091.17-39.3'
10.	Kajal Das, Ghoshpara, Kasba - GP	N-23.41-12.7' E-091.19-40.6'
11.	Braja Gopa Sinha, Kasba - GP	N-23.41-05.8' E-091.19-27.9'
12.	Dhaja Nagar, Purbo Tilla, Baidyadighi - GP	N-23.40-46.7' E-091.18-57.9'
13.	Nurmia House, Naraura Tilla, Rauthkhola - GP	N-23.40-11.4' E-091.17-56.2'

ANNEXURE -V**Performa of Action Taken Report:-**

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.